Prof. Khushbu Kumari
Guest Teacher
Dept. of Political Science
V.S.J. College, Rajnagar, Madhubani, Lnmu

Class - B.A-3 (H)
Paper - IV

Topic - अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के अध्ययन का यथार्थवादी दृष्टिकोण

राजनीतिक यथार्थवाद पूर्व मान्यताओं तथा अमूर्त आदर्शों के स्थान पर ऐतिहासिक घटनाओं को अपना आधार मानता है। यह अनुभव एवं तर्क पर आधारित है। इसमें तथ्यों और घटनाओं के वास्तविक स्वरूप के अध्ययन के पश्चात् तर्कसंगत निष्कर्ष निकाले जाते हैं और इसीलिए इसको राजनीतिक यथार्थवादी सिद्धान्त कहा जाता है। यथार्थवादी विचारधारा की अपनी कुछ मान्यताएँ हैं। यह विचारधारा मानती है कि संसार में दिखायी देने वाली विभिन्न अपूर्णताएँ मानव-स्वभाव में ही निहित कुछ मूलभूत प्रवृत्तियों का परिणाम है। इसलिए यदि इन अपूर्णताओं को दूर करना है तो इन प्रवृत्तियों के विरोध के स्थान पर उनसे मिलकर चलना होगा। यह विचारधारा यह भी मानती है कि संसार में अनेक परस्पर विरोधी स्वार्थ हैं जो आपस में टकराते हैं, इसलिए किन्हीं नैतिक सिद्धान्तों पर आधारित ऐसी किसी भी आदर्श व्यवस्था को प्राप्त करना सम्भव नहीं है, जहाँ बिल्कुल संघर्ष न हो। इसलिए विभिन्न स्वार्थों के मध्य संतुलन की स्थापना करके इस संघर्ष को कम करना होता है।

यथार्थवादी विचारधारा 18वीं और 19वीं शताब्दी में प्रचलित थी। 19वीं शताब्दी में ट्रीट्स्के और नीत्शे ने इस विचारधारा को

आगे बढ़ाया। यथार्थवादी विचारधारा द्वितीय विश्व-युद्ध के दौरान पुनः प्रतिष्ठित की गयी। सन् 1945 के बाद के अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति विचारकों जैसे - ई. एच. कार, जॉर्ज शवारजनबर्गर, क्विन्सी राइट, मॉर्गेन्थो आदि ने राजनीतिक यथार्थवाद को अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में लागू करने का प्रयास किया। अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के यथार्थवादी प्रतिमान को स्थापित करने में मॉर्गेन्थो का महत्वपूर्ण स्थान है। यह दृष्टिकोण राष्ट्रों के मध्य संघर्ष के सभी पहलुओं पर विचार करता है। राजनीतिक यथार्थवाद पर उनके भाषण और उनकी पुस्तक Politics among Nations के प्रकाशन ने अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के अध्ययन को बहुत प्रभावित किया।

मॉर्गेन्थो ने ही यथार्थवाद को सैद्धान्तिक आधार प्रदान किया है। उन्होंने अपने सिद्धान्त में 'शक्ति' पर मुख्य रूप से बल दिया इसलिए इसे शक्तिवादी दृष्टिकोण के नाम से भी जाना जाता है। शक्ति की परिभाषा करते हुए मॉर्गेन्थो ने कहा है कि "शक्ति मानव का अन्य व्यक्तियों के कार्यों तथा मस्तिष्क पर नियंत्रण है।"

मॉर्गेन्थो अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों को आदर्शवादी विचारधारा के अनुसार 'शान्ति की ओर संचालन' न मानकर 'राष्ट्रों के मध्य संघर्ष' मानता है। उसके अनुसार प्रत्येक राष्ट्र अपने राष्ट्रीय हितों की शक्ति द्वारा प्राप्त करने के लिए प्रयत्न करता है।

Scanned with CamScanner

इससे राष्ट्रों के मध्य शक्ति के लिए संघर्ष का जन्म होता है तथा यही अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का केन्द्र - बिन्दु तथा वास्तविकता है। उसका मानना है कि एक राष्ट्र सदैव अपने हितों को बनाये तथा सुरक्षित रखना चाहता है। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए राष्ट्रीय शक्ति एक साधन है। इस प्रकार प्रत्येक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र के साथ शक्ति संघर्ष में लगा रहता है।

Khushbu Kumari
20.08.2020

Scanned with CamScanner